JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

गोपेश कुमार शर्मा, शोधछात्र, लॉर्ड्स विष्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।
डॉ. सविता गुप्ता, प्रोफेसर, लॉर्ड्स विष्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।

प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जो अपनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे बुद्धिमान, चरित्रवान बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर अपनी समाजशास्त्रीय प्रकृति के रूप में समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। राष्ट्र की प्रगति का आधार शिक्षा को ही माना जाता है। इसी आधार पर शिक्षा आयोग (1964–66) ने कहा है कि ''भारत के भाग्य का निर्माण उनकी कक्षाओं में हो रहा है।''

किसी षिक्षार्थी के विकास में उसके परिवार का महत्वपमर्ण योगदान होता है। परिवार के सभी सदस्यों में माता–पिता का अपने बच्चों से सम्बन्ध अत्यन्त निकटता एवं आत्मीयता का होता है। माता पिता सदैव अपने बच्चों के हितों की चिन्ता करते हैं तथा अपनी संतान को यथासंभव सुविधाएं देने का प्रयास करते हैं। सदैव उसके हितों की रक्षा करते हैं तथापि मानव स्वभाव की विभिन्नता व परिस्थितियों की भिन्नता व विविधता के कारण उसके माता–पिता के साथ उसके संबंधो का विद्यार्थी के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव विद्यार्थी के स्वभाव, उसके व्यवहार व उसकी सभी गतिविधियों में परिलक्षित होता है। विद्यार्थी के गुणों की नींव बचपन से ही पड़ जाती है और उस समय उसका संसार परिवार ही होता है। परिवार के वातावरण से ही उसमें परिवारिक गुणों का भी समावेश प्रारम्भ होता है, जैसे – सत्य, असत्य, शान्ति, उदारता, कर्मठता, आदर, सत्कार, समायोजन और स्वार्थता आदि।

विद्यार्थी को प्रभावित करने वाले वातावरण में परिवार प्रमुख भूमिका निभाता है। बालक में वातावरणानुसार ही समयोजन व शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों का निर्माण होता है। सिद्धान्तः

यह सत्य भी है कि समायोजित परिवार का विद्यार्थी भी समयोजित होगा एवं उसकी अध्ययन आदतों में भी विषेषता आयेगी।

टामसन –''षिक्षा वातावरण का व्यक्ति पर वह प्रभाव है जो उसकी व्यवहारगत आदतों, विचारों तथा अभिवृत्तियों पर स्थायी रूप से डाला जाता है।''[1]

अच्छे शैक्षिक उपलब्धि स्तर व सुसमायोजन से विद्यार्थी का चरित्र ऊँचा उठता है, यदि पारिवारिक वातावरण में सच्चाई, ईमानदारी परिश्रम तथा कर्तव्यपरायणता आदि गुण हैं बालक सुसमायोजित है तो ये गुण एवं अध्ययन आदतों में विषेषतः विद्यार्थी में स्वतः ही उत्पन्न हो जाते हैं। क्या वास्तव में वातावरण विद्यार्थी की आदतों, उपलब्धि व समायोजन को प्रभावित करता है ?

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर ही शोधार्थी ने पारिवारिक वातावरण की महत्ता को जानने, उसका बालकों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन पर प्रभाव को जानने के उॅश्य से इस समस्या को चुना है। इस शोध के परिणामों के माध्यम से पारिवारिक वातावरण को विद्याार्थी के समायोजन, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि को सही और वैज्ञानिक रुप से देखा जा सकेगा।

समस्या का औचित्य :

विद्यार्थी अपने चारों ओर के वातावरण से प्रभावित होते हैं। परन्तु उन प्रभावों के कारणों से अनभिज्ञ रहते हैं तथा उनको पहचानने में अपने को असमर्थ पाते हैं। ऐसी स्थिति में वे अपने आपको असहाय, दीन–हीन व असमर्थ पाते हैं, यह स्थिति बालक के शैक्षिक विकास के लिए विघटनकारी होती हैं अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को, अभिभावकों को एवं शिक्षकों वस्तुस्थिति का आभास हो जाए, वे कौन–कौन से कारक है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं अध्ययन आदतों को प्रभावित करते हैं। अतः यह शोध विद्यार्थियों की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है।

उत्तम षिक्षा के लिए उत्तम वातावरण अत्यन्त उपयोगी है। यदि पारिवारिक वातावरण बालक बालिकाओं उत्तम होगा तो बालक का शैक्षिक उपलब्धि स्तर व समायोजन व अध्ययन आदतें भी श्रेष्ठ होंगी। इस का मूल कारण यह है कि प्राचीन समय में बालकों को वृद्धजनों से नैतिक मूल्य विरासत में मिलते थे। उन नैतिक व सभ्य मूल्यों के कारण ही विद्यार्थी आगे चलकर अपने जीवन को षिक्षा से सुदृढ़ बनाकर संवारता तो था ही अपितु अपने परिवार समाज व राष्ट्र को भी प्रगति के पथ पर चलाता था प्राचीन समय में इस प्रकार के उदाहरण मिलते है जिनको पढ़कर हमारा मन प्रसन्नता से खिल उठता है लेकिन प्रत्येक जगह एकसा वातावरण प्राप्त नहीं हो पाता। क्या वास्तव में वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों पर पड़ता है ? क्या पारिवारिक वातावरण विद्याार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है ? क्या पारिवारिक वातावरण विद्याार्थियों की अध्ययन आदतों

[1] सिंह, रामपाल व सिंह उमा (2007) षिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पृ. 5

को प्रभावित करता है ? क्या पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के समायोजन स्तर को प्रभावित करता है ? इन सभी प्रष्नों के उत्तर को जानने के लिये अनुसंधानकर्ता को इस विषय की आवश्यकता पड़ी और उसने अपने शोध के लिये इसे चुना।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :

1. कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. कक्षा 12 के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।
3. कक्षा 12 के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का अध्ययन करना।
4. कक्षा 12 के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करना।
5. कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं समायोजन का पारिवारिक वातावरण के साथ सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता।

पारिभाषिक शब्दावली

प्रस्तुत अनुसंधान में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का अर्थापन निम्नानुसार है–

शैक्षिक उपलब्धि

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य में कक्षा 11 के प्राप्तांक–प्रतिषतांकों को शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वीकार किया है।

अध्ययन आदतें

प्रस्तुत शोध में अध्ययन आदतों से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन हेतु की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं में प्रयुक्त व्यवहार से है।

समायोजन

वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने तथा पर्यावरण के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है, समायोजन कहलाता है।

पारिवारिक वातावरण

पारिवारिक वातावरण से तात्पर्य उस परिवेष से हैं जो परिवार के भौतिक एवं जैविक सम्बन्धों को न केवल आवृत किए हुए हैं बल्कि उसके प्रत्यक्ष प्रभाव से परिवार का स्वरूप एवं प्रकृति भी निर्धारित होती हैं।

अध्ययन परिसीमन

1. प्रस्तुत अनुसंधान राजस्थान प्रदेश के अलवर जिले तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत अनुसंधान में अलवर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 12 के किशोर बालक–बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत अनुसंधान में केवल 15 से 18 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत केवल 800 विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्ष के रूप में सोद्देष ;kn`fPNd न्यादर्ष विधि का चयन किया गया। जिसमें अलवर जिले सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कक्षा 12 के 800 छात्र/छात्राओं का डाटा संगृहण के लिए चयन किया गया है।

शोध विधि:

शोधार्थी द्वारा अपनी समस्या की प्रकृति एवं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है जिसके अन्तर्गत प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण चयनित न्यादर्श से उपकरणों के माध्यम से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन मापनी, अध्ययन आदतों का परीक्षण लिये है। इस शोध के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का चयन किया गया है –

1. विद्यार्थियों के कक्षा 11 के वार्षिक परीक्षा प्राप्तांकों के आधार पर "उपलब्धि परीक्षण।"
2. विद्यार्थियों के समायोजन परीक्षण के लिये डॉ. ए.के.पी. सिन्हा व डॉ. आर.पी. सिंह की समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है।
3. अध्ययन आदतों का परीक्षण करने के लिये एम. मुखोपाध्याय व डी.एन. सनसनवाल की अध्ययन संबंधी आदतों का परीक्षण लिया है।

4. पारिवारिक वातावरण मापनी—डॉ.करूणा शंकर मिश्रा

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में प्राकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रतिधियों का प्रयोग किया है।

1- मध्यमान

2- प्रमाणिक विचलन

3- सी.आर.—परीक्षण

4- सहसम्बन्ध

दत्त विश्लेषण

सारणी 1

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषण

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	Ekkud fopyu	e/;eku dk varj	Lkh-vkj-&eku	LohÑr@vLohÑr
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	62-24	10-900	2-981	3.463	0.01 स्तर पर vLohÑr
गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	65-22	13-324			0.05 स्तर पर अस्वीकृत

df=798 .05 level=1.96 .01 level=2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि — सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

सारणी 2

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का विश्लेषण

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	सी. आर. –मान	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	121-56	26-067	1-963	1-121	0.01 स्तर पर LohÑr
गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	123-53	23-370			0.05 स्तर पर स्वीकृत

df=798 .05 level=1.96 .01 level=2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि – सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सारणी 3

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर का विश्लेषण

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	सी. आर. –मान	स्वीकृत / अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	54-88	14-958	1.813	1.712	0.01 स्तर पर LohÑr
गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	53-07	14-983			0.05 स्तर पर LohÑr

df=798 .05 level=1.96 .01 level=2.59

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि – सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सारणी 3

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण का विश्लेषण

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान का अंतर	सी. आर. –मान	स्वीकृत/ अस्वीकृत
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	184.88	32.868	8.215	3.856	0.01 स्तर पर
गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	400	176.67	27.113			0.05 स्तर पर अस्वीकृत

df=798 .05 level=1.96 .01 level=2.59

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से उच्च पाया गया।

शोध में उद्देष्यों के अनुसार विष्लेषण करने पर प्राप्त निष्कर्ष :–

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी। सरकारी विद्यालय के छात्रों की तुलना में सरकारी विद्यालय की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी। गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं की तुलना में गैर सरकारी विद्यालय की छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के आयाम समझने की योग्यता, कार्य अभिविन्यास, अन्तर्क्रिया, अभ्यास, सहारा देना, अभिलेखन एवं भाषा में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकी आयाम एकाग्रता एवं स्टडी सैट्स में सार्थक अन्तर पाया गया। आयाम एकाग्रता एवं स्टडी सैट्स में सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का स्तर उच्च पाया गया।

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का समायोजन स्तर समान पाया गया परन्तु सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर के घटक सांवैगिक में सार्थक अन्तर पाया गया। गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन स्तर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से उच्च पाया गया। समायोजन के घटक सामाजिक एवं शैक्षिक में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों से उच्च पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के घटक नियंत्रण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकी सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की पारिवारिक वातावरण के घटक रक्षात्मक, दण्ड, अनुरूपता, पृथक्करण, प्रोत्साहन, अधिकारों से वंचन, देखभाल, अस्वीकृति एवं अत्यधिक स्वतंत्रता में सार्थक अन्तर पाया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों में कक्षा 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबध पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पायी गयी।

कक्षा 12 के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं पारिवारिक वातावरण में अतिनिम्न धनात्मक सार्थक सहसंबध पाया गया। सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें भी उच्च नहीं पायी गयी एवं गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें उच्च नहीं पायी गयी।

के विद्यार्थियों की समायोजन एवं पारिवारिक वातावरण में धनात्मक सहसंबध पाया गया। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण उच्च पाया गया उन विद्यार्थियों का समायोजन स्तर भी उच्च पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध से जो निष्कर्ष सामने आये हैं वे कई प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थों को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया गया है–

शैक्षिक अनुसन्धान का मुख्य उद्देश्य वस्तुतः शिक्षा जगत की समस्याओं का समाधान करना है। न केवल शिक्षा जगत की समस्याओं का समाधान करना है अपितु उन समस्याओं के समाधान हेतु

नया दृष्टिकोण विकसित करना भी इस अनुसन्धान का कार्य है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अध्ययन आदत एक अभिन्न अंग है एवं समायोजन का विशिष्ट स्थान होता है। आदतें मानव के व्यवहार को प्रभावित करती है। विद्यार्थी के व्यवहार को परिष्कृत करने में पारिवारिक वातावरण, अध्ययन आदतें, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन प्रेरणा स्त्रोत का कार्य करते है। पारिवारिक वातावरण, अध्ययन आदतें, एवं समायोजन ही विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निर्धारण में सहायक होती है ।

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के लिए इनका संतुलित होना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा मनोविज्ञान की भी यह एक विषय वस्तु रही है अतः शिक्षा शास्त्रियों के साथ–साथ षिक्षकों एवं अभिभावकों को भी इस संबंध में जानकारी होना परम आवश्यक है। पारिवारिक वातावरण, अध्ययन आदतें, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के प्रभाव को ज्ञात करने के लिए इस प्रकार के अध्ययनों की महती आवश्यकता है। इन तत्वों का ज्ञान होने पर ही हम विद्यार्थियों में बेहतर बौद्धिक स्तर का विकास कर उनमें इस प्रकार की सकारात्मक आदतों का विकास कर सकते है जिससे उनकी अध्ययन आदतें, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का निष्पादन बेहतर हो सके।

संदर्भ (References)

1- कपिल, एच.के. : (2006) “अनसंधान विधियाँ”, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा ।

2- त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., :(2006) “शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त”, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

3- ढौड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

4- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू.: (1997) “रिसर्च इन एज्यूकेशन”, प्रिटिंग हॉल प्रा. लि., नई दिल्ली।

5- भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,: (1977) “अनुसंधान परिचय”, एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।

6- भटनागर, आर. पी. तथा मीनाक्षी,: (2007) ‘शिक्षा अनुसंधान’ लायल बुक डिपो, मेरठ।

7- पाठक, पी.डी, : (2007) “शिक्षा मनोविज्ञान”, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

8- शर्मा, आर. ए., :(2009) ‘षिक्षा अनुसंधान’, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

9- शर्मा, आर.ए. एवं चतुर्वेदि, षिखा (2013): ‘‘शिक्षा मनोविज्ञान के दार्षनिक आधार” आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

10- शर्मा, डी.एल., :(2005) “शिक्षा तथा भारतीय समाज”, सूर्या पब्लिकेशनल, मेरठ।

11-श्रीवास्तव डी.एस. एवं प्रीति (2014): “शिक्षा मनोविज्ञान”, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।